

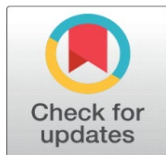
IMPORTANCE OF BRAND IN CLOTHING (WITH SPECIAL REFERENCE TO SRI GANGANAGAR)

वस्त्रों में ब्रांड का महत्व (श्रीगंगानगर के विशेष सन्दर्भ में)

Swarnlata Singh¹, Dr. Veerpal Kaur²

¹ Researcher, Home Science Government Women's College, Dausa, Rajasthan, India

² Associate Professor, Home Science Tantiya University, Sri Ganganagar, Rajasthan, India



DOI

10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2910

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](#).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



ABSTRACT

English: More effort and attention is required in the care and maintenance of clothes made of natural and pure fibres and threads. For example, after washing cotton clothes, you cannot wear them without ironing or pressing them, because they get wrinkled and such clothes do not look attractive and the person's self-confidence also starts to decrease. Similarly, pure silk clothes have to be kept very carefully. The fibre is very delicate and when it gets wet, it becomes very weak. It is also not able to keep its size and shape stable. Therefore, it has to be taken care of more carefully. Similarly, woollen clothes also have to be taken care of carefully, otherwise woollen clothes lose their original shape and look shapeless. It is also not comfortable to wear. In old times, so many chemicals were not used and people also took care of their precious clothes, but as people moved towards development, people did not have time to take care of their clothes. Humans wanted such clothes which can be easily taken care of and maintained. As a result, branded clothes made of man-made and artificial fibres started becoming available in the market.

Hindi: प्राकृतिक और शुद्ध तंतुओं और धागों से बने वस्त्रों की देखभाल और रखरखाव में ज्यादा मेहनत और ध्यान की आवश्यकता होती है। जैसे सूती वस्त्रों को धोने के बाद बिना प्रेस या इस्तीरी के वस्त्रों को नहीं पहन सकते, क्योंकि सिलवट ज्यादा पड़ जाती हैं और इस प्रकार का वस्त्र आकर्षक भी नहीं लगता और व्यक्ति का आत्मविश्वास भी कम होने लगता है। इसी प्रकार सिल्क के शुद्ध वस्त्रों को बहुत ही सावधानी से रखना होता है। तंतु बहुत ही नजाकत वाला होता है गीला हो जाने पर यह अत्यन्त कमजोर हो जाता है। अपने आकार और शेप को भी स्थिर नहीं रख पाता है। अतः इसकी देखभाल ज्यादा सावधानी से करनी होती है। उसी तरह से ऊनी वस्त्रों की भी देखभाल सावधानी से करनी होती है वरना ऊनी वस्त्र अपनी वास्तविक शेप व आकार को खो देते हैं और वस्त्र बेडोल दिखाई देता है। पहनने में भी आरामदायक नहीं होता है। पुराने समय में इतने ज्यादा रसायनों का इस्तेमाल नहीं होता था और मानव अपने कीमती वस्त्रों की देखभाल भी करते थे, परन्तु विकास की ओर अग्रसर होते ही, व्यक्ति के पास समय ही नहीं बचा अपने वस्त्रों की देखभाल और रखरखाव के लिए। मानव ने यही चाहा कि ऐसे वस्त्र हो जिनकी देखभाल और रखरखाव आसानी से हो सके। फलस्वरूप मानव कृत व कृत्रिम रेशो से बने ब्रांड वस्त्र बाजार में उपलब्ध होने लगे।

Keywords: Brand, Silk, Impact, Textile, Hibernation, Waking State, Archaeological, ब्रांड, रेशम, आधात, टैक्सटाइल, सुषुप्तावस्था, जाग्रतावस्था, पुरातात्विक

1. प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति चाहे जाग्रतावस्था में हो अथवा सुषुप्तावस्था में, काम करता हो या व्यर्थ बैठा हो, खेलता हो, रोगी हो, स्वस्थ हो, अमीर हो, गरीब हो, हर वक्त वस्त्रों का उपयोग करता है। यानि कहा जा सकता है कि वस्त्र जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है जितना खाना और मकान।

अपनी पुस्तक "TEXTILES" (टेक्सटाइल्स) में होलेन और सैडलर ने लिखा है "हम में से हर कोई जन्म से लेकर मृत्यु तक कपड़ों में घिरा रहता है। हम कपड़ों से बने उत्पादों पर चलते हैं और उन्हें पहनते हैं, हम कपड़े से ढकी कुर्सियों और सोफों पर बैठते हैं, हम कपड़ों पर और कपड़ों के नीचे

सोते हैं। कपड़े हमें सुखाते हैं या सूखा रखते हैं। वे हमें गर्म रखते हैं। धूप, आग और संक्रमण से बचाते हैं। घरेलू कपड़े सौंदर्य की दृष्टि से मनभावन होते हैं तथा रंग, डिजाइन और बनावट से भिन्न होते हैं।”

इसी तरह से टेरटोरा ने अपनी पुस्तक “अन्डरस्टैंडिंग टैक्सटाइल्स में लिखा है” “आधुनिक जीवन का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जो वस्त्रों के किसी न किसी क्षेत्र से अछूता हो।”

कैथरीन पेडौक हैस ने अपनी पुस्तक “टैक्सटाइल फाइवर एण्ड दियर यूज” में लिखा है- “हमारी सभ्यता में वस्त्र जीवन की आवश्यकता बन गए हैं क्योंकि वे मनुष्य के वस्त्र तथा उसके आश्रय और सुरक्षा से संबंधित अनेक वस्तुएँ-प्रदान करते हैं। वस्त्र उद्योग न केवल विश्व के सबसे पुराने उद्योगों में से एक है बल्कि यह मानव सभ्यता के विकसित होते स्वरूप से भी निकटता से जुड़ा हुआ है।”

उपरोक्त तथ्यों के अनुसार हमारे जीवन में वस्त्र व वस्त्र से बने परिधान और अन्य सामान बहुत महत्व रखते हैं। बिना वस्त्रों के हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। पहले जिन्दा रहने के लिए सिर्फ भोजन की आवश्यकता थी, फिर धीरे-धीरे मानव को खुद को सुरक्षित रखने की आवश्यकता महसूस हुई और मकान जिन्दगी का एक हिस्सा बने। प्रगति और विकास के साथ कपड़ों की आवश्यकता भी अनिवार्य हो गई, इस तरह व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा और मकान तीनों बेहद महत्वपूर्ण कारक हो गये। धीरे धीरे वस्त्र मानव सभ्यता और संस्कृति के सूचक और महत्वपूर्ण घटक बन गये।

जब हम “वस्त्र” शब्द सुनते हैं तो हमारे मस्तिष्क में वस्त्र उत्पादन से सम्बन्धित धोती, पेंट-कमीज, कोट-पेरवानी, साड़ी, सूट-सलवार, फ्रॉक आदि के ख्याल आते हैं। जबकि वस्त्र एक सामान्य अनुप्रयोग है जो रेशों से निर्मित धागे और धागों से बुनी एक शीट (प्लेन शीट) वस्त्र या कपड़ा कहलाती है। इसी बुनी हुई शीट को ही वस्त्र या कपड़ा कहते हैं और इसी से “परिधान” यथा साड़ी ब्लाउज, पेंट-कमीज़, कोट-पेंट, सलवार-कुर्ती, शेरवानी, फ्रॉक, गाउन इत्यादि बनाये जाते हैं। इसके साथ ही बिस्तर, पर्दे, कालीन, फर्नीचर कवर, रसोई में इस्तेमाल होने वाले नेपकीन आदि बनाये जाते हैं।

श्रीमती एस.पी. सुखिया का कथन है- “कपड़े से तात्पर्य उस कपड़े से माना गया है। जो धागे से बुनकर या किसी अन्य विधि से तैयार हुआ हो और वस्त्र शब्द के कपड़े से बने पहनने के लिए कमीज, पाजामा, कोट, पतलून, ब्लाउज आदि के लिए प्रयोग किया जाता है। पहले कपड़ा बनता है और फिर उनसे वस्त्र।”

वस्त्रों का मानव इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मानव सभ्यता या हम कह सकते हैं कि मानव सभ्यता का इतिहास वस्त्रों के इतिहास से अलग नहीं है। सभ्यताओं के उदय के साथ वस्त्र का भी उदय होता चला गया। वैसे ये कहना मुश्किल है कि वस्त्रों का विकास एडजैक्टली कब और कहा से हुआ। दार्शनिकविद और इतिहासकार की बातों से भी वस्त्र के वास्तविक काल और समय का पता लगाना नामुमकिन है कि वस्त्र का आविष्कार सबसे पहले कहाँ हुआ। ऐसा इसलिए है क्योंकि कपड़े या वस्त्र जल्दी ही सड़ जाते हैं, उनको बहुत लम्बे समय तक बचाने के उपाय भी नहीं थे। इसके बावजूद भी इतिहासकारों और पुरातत्वविदों की मानें तो सबसे पुरानी साड़ी 50,000 साल पूर्व में थी। सन बने रेशों का सबसे पुराना साक्ष्य 34,000 वर्ष पुराना है, जो जॉर्जिया गणराज्य से प्राप्त हुए हैं। जबकि कपड़े के सबसे पुराने साक्ष्य लगभग 6300 ईसा पूर्व के हैं, जो आज के आधुनिक राष्ट्र तुर्की में पाए जाते हैं। पहले समय सूती, सन और ऊनी रेशों से ही वस्त्र बनाये जाते थे, परन्तु ऐसा माना जाता है कि लगभग 2700 ईसा पूर्व चीन में रेशम के कीड़ों के कोकून से एक उच्चगुणवत्ता, मुलायम और चमकीला वस्त्र बनाया जा रहा था, जिसे रेशम कहा जाता था। रेशम इतना ज्यादा मूल्यवान था कि इसे पहनने वाले समाज के विषिष्ट वर्ग के धनी और कुलीन लोग ही थे। धीरे-धीरे इसका व्यापार होने लगा और यह मूल्यवान विलासिता की वस्तु बन गया। इसको आम आदमी तो खरीद ही नहीं सकता था।

एक अन्य अध्ययन बताता है कि भारतीयों के वस्त्रों की कथा सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारम्भ होती है, जो 2500 ईसा पूर्व के आस-पास थी। इस समय के लोग मुख्य रूप से प्राकृतिक रेशों का ही उपयोग करते थे, जो इनके ही क्षेत्र में उगते थे। जैसे-जैसे मानव और भारतीय समाज विकसित हुआ वैसे-वैसे इनकी वस्त्र परम्पराएँ भी विकसित होती गईं। वैदिक काल के (1200-500 ईसा पूर्व) दौरान ऋग्वेद और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों और महाकाव्यों का उल्लेख है। इन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के रेशम व ऊन जैसी मूल्यवान रेशों से बने वस्त्रों के उपयोग का उल्लेख मिलता है।

शरीर को आवरण के रूप में ढकने वाली कोई वस्तु, जो शरीर को प्राकृतिक आघातों से बचाने के साथ-साथ व्यक्ति को सौन्दर्य बोध कराती है, और सौन्दर्य भी प्रदान करती है। यह आवरण जानवरों की त्वचा (खालों), पेड़ों के बड़े-बड़े पत्ते (केले के पत्ते), घास-फूस और बेलों की पतली डंडियाँ-टहनियाँ हो सकती थी। तन को आवरण प्रदान करने के लिए संभवत यहीं से वस्त्र की उत्पत्ति हुई। अतः कह सकते हैं कि शरीर को ढकने सुरक्षा प्रदान करने वाले आवरण को ही वस्त्र कहा जाता है।

वस्त्र का अर्थ एवं परिभाषा

टेक्सटाइल शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द के “टेक्स्टिलिसू” से हुई जिसका अर्थ है कपड़ा। ऐसे उत्पादों को कपड़े या वस्त्र के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो धागों के आधार पर जुड़े होते हैं, कपड़ा शब्द में तंतु (पिड़ितम), फिना गैर (अनवरत लम्बा तंतु) यान या धागा (ताना और बाना) से बुने हुए, ब्रेडेड और बिना बुना हुआ कपड़ा शामिल हैं।

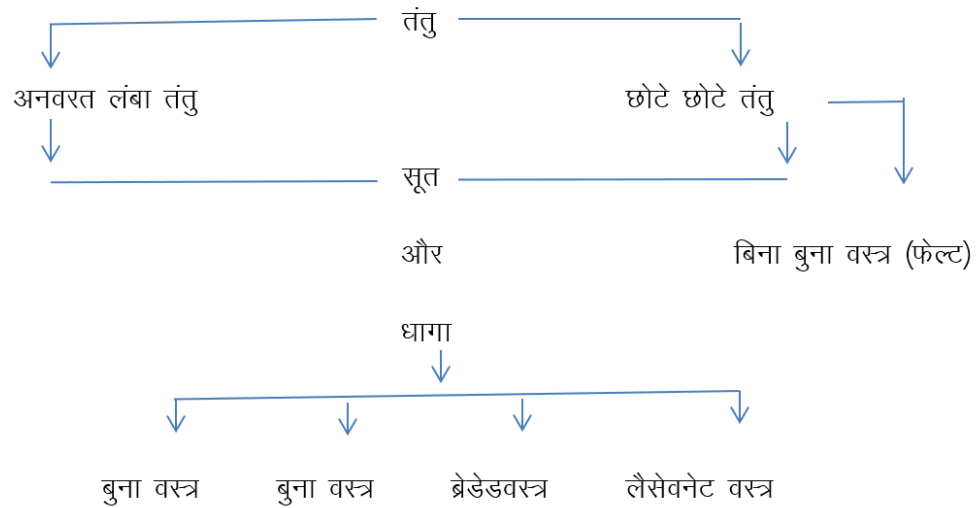
दो धागों (ताना और बाना) के आपस में एक-दूसरे में इन्टरलेस करने पर जो उत्पाद सामने आता है वह वस्त्र कहलाता है।

इसी प्रकार रेशों से निर्मित धागे ही वस्त्र के मुख्य आधार हैं। इन्हें ही दोनों ओर से लम्बवत और आड़े (स्मदहजीूपेम ंदक बतवेेूपेम) लाकर आपस में गूँथ कर वस्त्र का रूप दिया जाता है।

कोलियर्स ने अपनी पुस्तक में लिखा है- कपड़े धागे या सूत की अंतर बुनाई से बने होते हैं।

मानव को संभवतः कपड़ा बुनने की प्रेरणा लताओं, गुल्मों को आपस में फँसाते हुए देखकर तथा पक्षियों को तिनको को आपस में फँसाकर घोंसला बनाते देखकर मिली, तभी तो मानव ने भी लचीली वस्तुओं को गुंथकर कुछ सामानों को बनाने का प्रयत्न किया, जिसका परिणाम चटाई, टोकरी सामने आया। समय के साथ मानव विकसित होता गया और वस्त्र उत्पादन भी होने लगा।

चूंकि प्राचीन समय में वस्त्रोपयोगी रेशे सीमित थे या कहीं सूती, सन और ऊनी रेशा ही था तब वस्त्र बनाने के तरीके भी यही सीमित थे। वस्त्र बनाने की सम्पूर्ण प्रक्रिया मनुष्य हाथों से सम्पन्न करता था। मसलन तंतुओं की सफाई, एक सार करना और उनको आपस में सटाना, सटा कर उनकी बटाई कर धागा या सूत तैयार करना और फिर वस्त्र की बुनाई करना। ये आधारभूत तरीका है। अगर वस्त्र बनाने का तरीका हम फ्लो चाट से देखें तो समझ आयेगा कि वस्त्र कैसे बनाये जा सकते हैं।



वस्त्र प्रकार

वस्त्र बनाने की प्रक्रिया में तंतु या रेशा सबसे छोटी और आधारभूत ईकाई है। वर्तमान काल में विकासशील मानव ने वस्त्र बनाने के कई तरीके खोज डाले। वस्त्र बनाने के मुख्य रूप से 4 तरीके हैं-

- 1) **बुनाई** - वस्त्र बनाने की विधि मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा संस्कृति में 3500 ई. पूर्व से लेकर 1500 ई पूर्व तक विकसित थी। जहाँ से अनेक तंतुओं की फिरकियाँ (सूत काटने की तकली) प्राप्त हुई हैं इससे ज्ञात होता है कि उस काल में भी सूत काटने की परम्परा थी, अगर सूत काटने की परम्परा रही है तो बुनने की भी अवश्य रही होगी। सिन्धु घाटी से प्राप्त एक सूती वस्त्र जिससे ज्ञात होता है कि उस काल में भारतीय लोग सादी बनावट से (चसपद ँमंअम) भलीभाँती परीचित थे। उस काल में सूत और ऊन के ही वस्त्र बनाये और पहने जाते थे।

अधिकांश वस्त्रों का निर्माण बुनाई विधि द्वारा किया जाता था। इसमें वस्त्रनिर्माण के लिए दोनों ओर (लम्बाई की तरफ से और चौड़ाई की तरफ से) से धागे लगते हैं। धागो को ताना कहा जाता है और अनुप्रस्थ धागों को बाना या भरावन धागा कहते हैं। दोनों ओर से इन्हीं धागों को आपस में फँसाने की क्रिया के द्वारा ही वस्त्र निर्माण होता है।

जैसे-जैसे व्यक्ति विकास की धारा में आगे बढ़ता गया, बुनाई की नई-नई विधियों का आविष्कार करता गया। आज आधुनिक युग में अनगिनत विधियों और अनेकों प्रकारों की बुनाईयों से वस्त्र बुने जाते हैं। सूती वस्त्रों का निर्माण व उत्पादन सम्पूर्ण भारत के लगभग सभी राज्यों में होता था।

- 2) **निटिंग (बुनाई)** - ऊनी वस्त्रों का इतिहास भी काफी प्राचीन है। वैदिक काल में भारत में ऊनी वस्त्र प्रचलित थे। वे लोग भेड़ को उणाँवती कहते थे और ऊन को आविक कहते थे, सिन्धु घाटी को "सुवासा उर्णावती" कहते थे क्योंकि वहाँ भेड़ की ऊन-प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती थी।

जहाँ बुनाई (विविंग) करने के लिए दो धागों की आवश्यकता है वहीं पर निटिंग करने के लिए एक ही धागे की आवश्यकता होती है। हाथ से निटिंग करने की कला बेहद पुरानी है। हाथ से बुने एक मोजे का जोड़ा मिस्र देश के एक मकबरे में पाया गया जो अत्यंत रुक्ष और मोटे जाल की रचना जैसा है। विहानों का मानना है कि वह संभवतः ईसा पूर्व चौथी शताब्दी का बना हुआ है। होलेन एवं सैडलर ने लिखा है कि "250 ईस्वी पूर्व के बुने कपड़ों के अवशेष प्राचीन फिलिस्तीन की सीमाओं के पास पाए गये थे।

एन. एम. छानियर्स ने अपनी पुस्तक 'अ हैंड बुक ऑफ टेक्सटाइल' में लिखा है कि "हाथ से बुनाई एक प्राचीन कला है जो संभवतः ईसा पूर्व काल से चली आ रही है, हालांकि इसे पंद्रहवीं शताब्दी में ब्रिटेन में पेश किया गया था और रानी एलिजाबेथ को भारी मात्रा में स्टॉकिंग्स की बुनाई के लिए जाना जाता था।"

यूरोप में यह कला पंद्रहवीं शताब्दी में पहुँची। आरम्भ में ऐसा अनुमान है कि लकड़ी या हड्डियों से बनी तीलियों से निटिंग की गई होगी। स्पेनवासियों ने सर्वप्रथम स्टील की बनी नीडिल का प्रयोग किया ऐसा माना जाता है।

डॉ. लेवार्थ ने इसके बारे में लिखा है कि “15 वीं और 16 वीं सदी में इंग्लैंड और स्कॉटलैंड में हाथ से ऊनी स्टॉकिंग्स बुनना एक कुटीर उद्योग था। हाथ से बुने रेशम के स्टॉकिंग्स, हमारे वर्तमान मानक के अनुसार बहुत भारी और मोटे 16 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इटली से आयात किये गये थे।

मानव बिना रूके अनवरत विकास करता गया। ऊनी वस्त्रों को बनाने की मशीन का आविष्कार एक इंग्लिश क्यूरेटर रेवरेंड विलियम ली ने 1598 में नाटिंगम (इंग्लैंड) में किया।

होलेन और सैडलर ने निटिंग को परिभाषित किया है “निटिंग एक कपड़ा निर्माण प्रक्रिया है जिसमें सुईयों का उपयोग एक या एक से अधिक धागों से या धागा के एक सेट से इंटरलॉकिंग लूप की श्रृंखला बनाने के लिए किया जाता है।”

डॉ. लेवार्थ ने निटिंग को परिभाषित किया है- निटिंग या बुने हुए कपड़े लूपों (फन्दों) की पंक्तियों के बने होते हैं और प्रत्येक पंक्ति पहले से बनी पंक्ति में फँसी होती है।

इस प्रकार आज आधुनिककाल में ऊनी वस्त्र खूबसूरत और मशीनबारीक धागों से बने मुलायम होते हैं और वस्त्र उद्योग में ऊनी वस्त्रों का बड़ा ही महत्व और बाजार है।

3) फेल्टिंग या बिना बुना वस्त्र - इसे फेल्ट या नमदा भी कहा जाता है। इतिहास में इस बात का उल्लेख मिलता है कि नमदा उद्योग के संरक्षक केन फ्रांस के सेन्ट फ्यूट्रे थे जो अपनी लम्बी पैदल यात्रा के दौरान अपने जूतों में आराम के लिए ऊन-तन्तु रखते थे। उनके पैरों के दाब, नमी और गर्मी से तन्तु एक दूसरे में चिपक कर एक परत बना लेते थे। इसके अलावा विभिन्न संस्कृतियों में फेल्ट की उत्पत्ति के अलग-अलग प्रसंग हैं जैसे - पश्चिमी परंपरा में फेल्ट के आविष्कार का श्रेय सेंट क्लेमेंट या सेंट जेम्स को दिया जाता है। उन्होंने सैडल से पड़ने वाले छालों से बचने के लिए अपने सैडल में प्राकृतिक छोटे-छोटे रेशों को डाला था, लेकिन गर्मी, दबाव और पसीने की नमी ने रेशों को फेल्ट में बदल दिया।

सुमेरियन किंवदंती के अनुसार, यादुआ नामक उर्नमन ने फेल्ट की खोज की थी।

उपरोक्त इतिहास और उनकी किंवदंतियों के अनुसार कहा जा सकता है फेल्ट दुनिया का सबसे पुराना कपड़ा माना जाता है। फेल्ट के सबसे पुराने पुरातात्विक साक्ष्य 65000 ईसा पूर्व के हैं, जो इस कपड़े के किसी भी बुने हुए कपड़े से भी पुराना है। फेल्ट के सबसे पुराने संरक्षित नमूने तुर्की में पाए गए थे, ऐतिहासिक साक्ष्य अल्ताई पर्वत को उस क्षेत्र के रूप में पहचानते हैं जहाँ फेल्ट से पहली बार परिष्कृत उत्पाद बनाए गए थे।

नमदा बनाने की सरल शब्दों में जो प्रक्रिया है, वो ये कि जांतव तंतु जैसे-ऊन, ऊन के तंतु, बकरी आदि के तंतुओं को साफ कर एक परत बनाई जाती है उस परत पर थोड़ी नमी दी जाती है और उस पर दूसरे तंतुओं की परत बना दी जाती है। इस प्रकार परत दर परत लगाई जाती है हर परत के बाद नमी दी जाती है। अन्त में भाप और दबाव दिया जाता है इन तंतुओं की सारी परतों पर कुछ समय बाद ये सारे तंतु आपस में जुड़ कर एक जाल बना लेते हैं सारी-परतें एक के ऊपर एक मिलकर एक मुख्य परत बना लेती हैं और नमदा वस्त्र तैयार हो जाता है। इसके बाद इसकी परिष्कृत और परिसज्जा की जाती है। यह वस्त्र अन्य वस्त्रों से बिल्कुल अलग है अगर ये कहीं से कट-फट जाता है तो रिपेयर नहीं हो पाता क्योंकि तंतु का कोई फिक्स ताना-बाना नहीं होता और खुले तंतुओं को रिपेयर करना मुश्किल काम है।

उपरोक्त तीन विधियों से मुख्य रूप से वस्त्र- बनाये जाते हैं बुनाई, निटिंग व फेल्ट (बिना बुना वस्त्र) की ये विधियाँ प्राचीन समय से ही प्रचलित हैं वस्त्र उत्पादकता में तीनों विधियों में प्राकृतिक तंतु और तंतुओं से बने, धागों का उपयोग होता रहा है। नमदे में जांतव तंतुओं का उपयोग होता रहा है। जैसे-जैसे मानवकृत और कृत्रिम तंतुओं की बाजार में उपलब्धता बढ़ी है, वैसे-वैसे वस्त्रों के प्रकार भी अनगिनत हो गये हैं। मानव जैसे ही सभ्य हुआ उसे विकास की आवश्यकता हुई और विकसित होते-होते मानव विकास की ऊँची दौड़ में कहीं गुम हो गया। मानव की जिन्दगी व्यस्त से व्यस्ततम हो गई, हालत ये हो गये कि अपने आप को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने के लिए भी उसे समय में से समय निकालना पड़ा। वस्त्र-परिधान खुद अन्य के सामने प्रस्तुत करने का एक सक्षम और ताकतवर साधन है। किसी भी व्यक्ति के पहनावे से आप ये बता सकते हैं कि सामने वाला व्यक्ति किस विचारधारा, मानसिकता और सामाजिकता से है। अब बाजार में तंतुओं से बने वस्त्रों के विकल्प में वस्त्र मिलने लगे हैं। सिल्क की जगह रेयॉन, ऊन की जगह एक्रिलिक नायलोन, सूती बन की जगह मिक्स सूती वस्त्र। ये विकल्प मानव के लिए आसानी लेकर आये, इस प्रकार के वस्त्रों की देखभाल, इनका रखरखाव बहुत ही आसान और सरल होता है।

श्रीगंगानगर जिला राजस्थान राज्य का वो जिला है। जिसे “खाद्य कटोरा” तो कहा ही जाता है “छोटा पंजाब” या “राजस्थान का पंजाब” भी कहा जाता है। इस शहर में दो संस्कृतियों का प्रभाव या कहें कि राजस्थान पर पंजाब का प्रभाव, श्रीगंगानगर को विकास और सोच के मामले में हमेशा अग्रणी रखता है। गंगानगर पर पंजाब का प्रभाव इसलिए भी है कि इसकी सीमा पश्चिम में पाकिस्तान और उत्तर में भारत के पंजाब राज्य से लगती है। श्रीगंगानगर के सबसे नजदीक पंजाब का शहर अबोहर है जो मात्र गंगानगर से लगभग 50 किलोमीटर दूर है। इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि राजस्थान के जिले से पंजाब कितना ज्यादा नजदीक है। गंगानगर के आस-पास के गाँव वाले और शहरवासी यही (गंगानगर) से रखरीददारी करने आते हैं। विशेष अवसरों पर भी वस्त्रों और अन्य कीमती सामानों की खरीददारी यहीं से करते हैं। यहाँ के लोगो का ब्रांड के प्रति जो रुझान है उसका पहला कारण तो यह है कि यहाँ का समृद्ध बाजार, यहाँ के बाजार में सभी ब्रांडेड शोरूम हैं जो वस्त्र परिधान से लेकर, जूते-चप्पल, पर्स, अन्डरगैरमेंट, सौंदर्य प्रसाधन और अन्य अलंकरण की वस्तुओं के भी शोरूम हैं।

यहाँ के स्थानीय लोगों की खरीददारी क्षमता तो उच्च है ही यहाँ के आस-पास बसे गाँव वालों की खरीददारी क्षमता भी श्रेष्ठ है। दूसरा कारण ये मान सकते हैं कि यहाँ की आर्थिक स्थिति अन्य जिलों से बेहतर और समृद्ध है। यहाँ के लोग अनावश्यक रूप से अपव्यय भी करते हैं। यद्यपि उन्हें पता है कहाँ पर कैसा और कितना व्यय करना है। सामाजिक, क्रियाकलापों, समारोह, मांगलिक कार्यों में जहाँ पर उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़े वही पर योजनाबद्ध तरीके से व्यय करते हैं।

श्रीगंगानगर में वैसे तो विभिन्न जातियों और धर्म के लोग निवास करते हैं। बिना किसी मतभेद, मनभेद के यहाँ पर राजस्थानी, पंजाबी, हिन्दी व अंग्रेजी के अलावा स्थानीय भाषाओं का उपयोग भी किया जाता है। बागड़ी व बहावलपुरी भी बोली जाती है। बागड़ी ज्यादा बोली जाती है इसके अलावा यहाँ पर सिखों की संख्या बहुतायत है और इसी कारण से शहर के सामाजिक परिवेश पर पंजाबी - प्रभाव सर्वाधिक देखने को मिलता है।

सिख समुदाय के लोगो का मानना है कि जिन्दगी जिन्दादिली के साथ जीनी चाहिए, ये लोग मेहनती, हिम्मती और जीवट लोग होते हैं। कोई भी सिख व्यक्ति आपको बेकार या खाली नहीं मिलेगा, वह कार्य करेगा कोई न कोई जो उनकी आर्थिक स्थिति सुधार सके। इनके विचार के अनुसार कोई भी कार्य छोटा नहीं होता। यह समुदाय धार्मिक भी होते हैं अपने धर्म के प्रति पूर्ण ईमानदार और धर्मनिष्ठ। इस समुदाय के लोग नई चीजों को आसानी से और बेझिझक अपनाते हैं। चाहे खान-पान, रीती-रीवाज और पहनावा। ब्राण्ड के प्रति जो स्थानीय लोगों का रूझान और दिलचस्पी है उसका कारण भी यहीं लोग है। सिख समुदाय के लोगों को भारत बाहर जाने का क्रेज है इसके लिए लोग खूब मेहनत भी करते हैं। सबसे ज्यादा सिख लोग कनाडा और आस्ट्रेलिया जाना पसंद करते हैं। जो समुदाय अपनी जिन्दगी में इतने ज्यादा एडवांस होते हैं वो लोग समय के साथ बहते हैं फैशन फॉलो करते हैं, “ब्राण्ड्स को खोजते हैं और अपनाते हैं।”

2. निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में वस्त्र का आवरण जो तन को ढकता है और धागों से बनता है ये परिभाषा से जाना, प्राकृतिक और मानवकृत रेषों से 3 तरीके से वस्त्रों को बनाया जाता है, प्रत्येक उत्पादक अपने उत्पाद को अन्य से भिन्नता प्रदान करने के लिए ‘ब्रांड’ को अधिकृत रूप से प्रयोग करता है यहीं ब्रांड उस उत्पाद का ब्रांड नाम बन जाता है। 4 प्रकार के ब्रांड होते हैं। ब्रांड के प्रति रुचि और रूझान शहरवासियों का सोशल मीडिया, दोस्तों और सामाजिक समूह के कारण पैदा होता है। जिसके कारण वस्त्र-परिधान खरीदते समय वे ब्रांड को प्राथमिकता देते हैं। चूंकि व्यक्ति ब्रांड में रुचि रखता है और उसे अपने वस्त्रों में स्थान देता है तो इससे उसके वैचारिक स्तर, मानव व्यवहार और मनोविज्ञान उच्च स्तर के दिखाई देते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आज के समय में वस्त्र मात्र शरीर ढकने के आवरण से ऊपर उठ प्रतिष्ठा का स्तर बन गया है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

- Susheela dantyagi : fundamentals of textiles and their care, orient longman limited, new delhi 1998
 Dr. Pramila Verma, Textile Science and Apparel, Bihar Hindi Granth Academy, New Delhi 1998
 Patni Manju, Textile Science and Apparel, Star Publication, Agra. 4- investopedia.com, what is brand ?
www.brandingmag.com, what is branding and why is important.
www.swavelle.com, translate.google, what are textile ?
www.techtarget.com, what is a brand ?